RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER | ESTABLISHED 2004 | NEW DELHI | AUGUST 2015 | PAGES - 8 | PRICE - 1/- | MONTHLY BILINGUAL (HINDI/ENGLISH)

लाल किले की प्राचीर से

प्रधानमंत्री का संबोधन-

लाल किले की ऐतिहासिक प्राचीर से नरेंद्र मोदी ने जब पहली बार संबोधित किया था, तो देश ने अपने नए प्रधानमंत्री को बड़े चाव से सुना। उनकी बातों से वे उत्साहित और प्रेरित हुए। तब मोदी के भाषण में समाज सुधार एवं आर्थिक पुनर्निर्माण की दृष्टि और उन्हें व्यावहारिक रूप देने की राजनीतिक इच्छाशक्ति की झलक मिली।

सालभर बाद प्रधानमंत्री जब फिर राष्ट्रीय झंडा फहराने लाल किले पर आए, तब उनके पीछे उनकी सरकार का सालभर का कामकाज का था। यानी उनकी बातों को मापने का एक पैमाना लोगों के पास आ चुका था। इस बार मोदी ने मिनट के संबोधन का रिकॉर्ड बनाया। अपने चिरपरिचित अंदाज में बोले। श्स्टार्ट अप इंडियाष और श्स्टैंड अप इंडियाष जैसे नए नारे उछाले। किसानों, दलितों और वंचित तबकों के प्रति खास चिंता दिखाई। श्टीम इंडियाष के समन्वित प्रयास का आह्वान किया। मगर कहना कठिन है कि वे वैसा प्रभाव उत्पन्न् कर पाए, जो 15 अगस्त 2014के उनके भाषण के समकक्ष हो श्रोताओं से श्कनेक्टष करने की अपनी बहुचर्चित खूबी से वे लोगों का ध्यान खुद पर केंद्रित रखने में सफल रहे, परंतु उनकी बातों का कितना गहरा असर हुआ, यह आकलन का विषय है। गौरतलब है कि उनका भाषण खत्म होते ही राष्ट्रीय राजधानी के जंतर–मंतर पर श्वन रैंक वनपेंशनष की मांग के समर्थन में धरना दे रहे पूर्व सैनिकों ने अपनी प्रेस कांफ्रेंस शुरू कर दी। उन्होंने इस मांग को सिद्धांत रूप में स्वीकार करने की प्रधानमंत्री की घोषणा को अस्वीकार कर दिया। अपनी नाराजगी का खुला इजहारकिया।

यह घटनाक्रम महत्वपूर्ण है, क्योंकि राष्ट्रीय सुरक्षा और सुरक्षाकर्मियों के मुद्दों पर भाजपा की एक खास छवि रही है। इस तबके में उसके प्रति असंतोष दिखे, तो यह इस बात की झलक है कि लोग मोदी सरकार को अपनी अपेक्षाओं की कसौटी पर कसने लगे हैं।यह होना अस्वाभाविक नहीं है।चुनावी वादों और सरकार चलाने में फर्क होता है। लेकिन इन दोनों के बीच बढ़ते अंतर से ही वह भावना फैलती है, जिसे श्एंटी इन्कम्बेंसीष (सत्ताधारी से नाराजगी) कहा जाता है। यह भावना गुजरते वक्त के साथ और गहरी हो सकती है। उस हालत में सपने दिखाना कठिन होगा, क्योंकि लोग पहले पुराने सपनों का हिसाब मांगेंगे। प्रधानमंत्री के भाषण पर आम प्रतिक्रिया में इसकी शुरुआत हो चुकने के संकेत मिले हैं।

उधर विपक्ष ने गुजरे एक वर्ष में खुद को संभाला है। उसने अपना कथानक लोगों के सामने रखने की कोशिश की है। उसके उठाए मुद्दों पर जनता का एक वर्ग ध्यान देने भी लगा है। इसीलिए मोदी का स्वतंत्रता दिवस संबोधन प्रभावशाली होने के बावजूद पिछले साल जैसा आशा का माहौल नहीं बना पाया।

–बालकृष्ण मिश्र

एक आजादी मिली, अब दूसरे की बारी

सदी बदल गई, देश बदल गया, दुनिया बदल गई... लेकिन क्या स्त्री की स्थिति में बहुत बदलाव आया है? वैसे ये सवाल कई दशकों से पूछा जा रहा है... आगे कई दशकों तक पूछा जाएगा। क्यों? क्योंकि इसका जवाब उतना सरल और सीधा नहीं है। सतह पर तो सब कुछ बहुत सहज, सरल और सधा हुआ है।

बेटियों को पढ़ाया जाता है, उन्हें आत्मनिर्भर होने के मौके मिलते हैं, अपनी पसंद के कपड़े पहनने की...अपनी पसंद का करियर चुनने की... अपनी पसंद की जिंदगी चुनने की और बहुत हद तक अपना जीवन–साथी चुनने की आजादी भी हासिल कर ही ली है, उसने...। तो फिर पेंच कहां है???

पेंच है और वो बहुत गहरा है। इसे समझने के लिए स्त्री के जीवन के अंतर को समझने की जरूरत है। उसे समझने की जरूरत है, जो वो पहले जीती थी और जो उसे अब हासिल है। एक वक्त था, जब घर से ये निर्धारित होता था कि लड़की को कहां जाना है! क्या पहनना है! कितना पढ़ना है! किससे बोलना है और किससे नहीं बोलना है! क्या करना है और क्या नहीं करना है! क्या करेगी और क्या नहीं करेगी तो सुशील कहलाएगी और क्या करेगी तो असभ्य कही जाएगी। पितृ सत्ता ने उसके जीने के लिए कुछ नियम–कायदे–कानून तय किए थे।

वह जानती थी कि यदि स्त्री ने मुंह खोला तो उनकी अपनी सत्ता खतरे में पड़ जाएगी और मुंह तो वह तभी खोल पाएगी, जब उसके दिमाग में रोशनी प्रवेश करेगी। और अक्षर... शब्द ये ही रोशनी का स्रोत है, इसलिए इसी से उसे दूर रखा जाना चाहिए। फिर ऐसा जाल भी रचा कि एक स्त्री को ही दूसरे की रखवाली में बैठा दिया। मां के रूप में या बहन, भाभी, सास, ननद या फिर जेठानी के रूप में...बेटी, बहन, ननद, बहू, भाभी या फिर देवरानी की पहरेदारी में रहती हैं।उस वक्त लोक जीवन में लोक–गीत रचे जाते थे। मां अपनी बेटी को शादी से पहले सिखाती थी श्तुम पति के घर जाओ तो ये करना, ये नहीं करना। मां बताती थी गाकर कि – श्मांगे–मांगे ननद रानी हार, हो लालन की खुशी...श यदि बेटा जना है और उस खुशी में ननद कुछ मांगे तो बिना ना–नुकुर दे देना। मतलब त्यागने के लिए किसी भी हद तक चली जाना।

कायदे–कानून को कभी सीधे कहकर तो कभी दूसरों के उदाहरण से... कि अरे देखो उसकी बहू तो तपते बुखार में भी मेहमानों की खातिरदारी करती रही और किसी को अहसास तक नहीं होने दिया... या ननद की शादी में उसने सारे गहने बिना ना–नुकुर के दे दिए। या फिर ये कि सास उसे जैसा पहनने के लिए कहती है वही पहन लेती है। यह सिलसिला सालों–साल चलता रहा, अभी भी चल ही रहा है। लेकिन इस बीच कई–कई लोगों और कई–कई दशकों के प्रयासों के बाद स्त्री की स्थिति में परिवर्तन आया था।आजादी के बहुत पहले से ही देश के अलग–अलग हिस्सों से ईश्वरचंद्र विद्यासागर, राजा राममोहन राय, विवेकानंद, सावित्री बाई फूले और पंडित रमाबाई ने स्त्री शिक्षा को उसकी आजादी का रास्ता बताया। शुरुआती दौर में समाज और परिवार दोनों ने ही थोड़ी झिझक दिखाई, लेकिन अंततरू स्वीकार कर लिया गया। अब वो हर जगह अपनी उपस्थिति दर्ज कर रही थी। हर जगह को अपनी रोशनी से रोशन कर रही थी, तभी...ऐन तभी बाजार ने उसकी जिंदगी में दखल देना शुरू कर दिया।

घर से बुजुर्गों और समाज के नियमों से निकलकर खुले आसमान में पंख फैलाकर उड़ने वाली स्त्री को एक नए लेकिन बहुत छोटे–से आसमान में कैद कर दिया गया। उसकी हदें उसकी देह की सीमा में समेट दी गई। जी... स्त्री को अब ये बताया जा रहा है कि यदि आप लंबी, छरहरी और गोरी नहीं है। यदि आपके बाल सॉफ्ट और सिल्की और त्वचा शाइनी और सपल नहीं है तो फिर शादी के बाजार में तो ठीक है, दुनिया के किसी भी हिस्से में आपके लिए कोई जगह नहीं है। ये इतनी खूबसूरती से किया जा रहा है कि यकीन ही नहीं होता है कि स्त्री के लिए आजादी का कोई और मतलब हो भी सकता है!बाजार बता रहा है कि स्त्री की आजादी के मायने क्या है? पहले पितृ–सत्ता ने उसकी हदें बताईं थी। पहले उसे मर्यादा, त्याग, सहनशीलता की मूर्ति के तौर पर स्थापित कर एक आदर्श की महिमा मंडन किया जाता रहा और आज स्त्री से विद्रोह की उम्मीद कर रहा है, बाजार। उसे अपनी मर्यादा का परित्याग करने, त्याग के बजाए अंधी दौड़ का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित कर रहा है बाजार। आज विज्ञापन के लिए जो प्रियंका, दीपिका और करीना कर रही हैं, उन्हें करने की जरूरत नहीं है। हकीकत में उन्हें तो इसका विरोध करना चाहिए।

क्योंकि ये सारे विज्ञापन उसे एक अंधेरे से निकलकर दूसरी अंधेरी सुरंग में दाखिल होने के लिए प्रेरित करते हैं। गोयाकि रोशनी उसके नसीब में ही नहीं है। तो ऐसे दो अंधेरों के बीच रोशनी की किरण सिर्फ वे महिलाएं हैं जो अपने रोशन दिमाग से पितृ–सत्ता और बाजार–सत्ता से सीधे संघर्ष कर रही हैं। अपनी–अपनी जगहों पर अपनी संवेदनशीलता, योग्यता और क्षमता से इस समाज को रोशन कर रही है। स्त्री के लिए नई जमीन बना रही हैं।

प्रस्तुति- शिखर, बीजेएमसी द्वितीय वर्ष

न्यूयार्क के इंडिया डे परेड में हजारों ने लिया हिस्सा -

भारत के स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर न्यूयॉर्क में आयोजित 35वें इंडिया डे परेड में बॉलीवुड हस्तियों, राजनेताओं, क्रिकेटरों समेत हजारों भारतवंशियों ने हिस्सा लिया। फिल्म अभिनेता अर्जुन रामपाल इस परेड के ग्रैंड मार्शल रहे, जबकि अभिनेत्री परिणीति चोपड़ा इस कार्यक्रम की गेस्ट ऑफ आनर थीं।

इस कार्यक्रम में हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर, पूर्व केंद्रीय मंत्री शशि थरूर, कौंसल जनरल ज्ञानेश्वर मुले, क्रिकेटर वीरेंद्र सहवाग, संगीतकार शंकर महादेवन, टीवी कलाकार आमिर अली, संजीत शेख और भारतीय मूल की अमेरिकन सिंगर जेफ्री इकबाल समेत अन्य लोगों ने हिस्सा लिया।

इस दौरान करीब 50 हजार से ज्यादा लोग इकट्ठा हुए। यह परेड मैनहट्टन सिटी के मेडिसन एवेंन्यू के करीब 20 गलियों से होकर गुजरी। इस दौरान विभिन्न तरह की झांकियां और रंगारंग कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था। गौरतलब है कि इस परेड का आयोजन फेडरेशन ऑफ इंडियन एसोसिएशन द्वारा 1981 से किया जा रहा है।

प्रस्तुति- तुषिता, बीजेएमसी द्वितीय वर्ष

पीएम मोदी के लाल किले से भाषण की 11 बड़ी बातें

9वें स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से दिया प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भाषण देश हित, नागरिक हित को समर्पित रहा। अपने भाषण के दौरान पीएम ने कुछ ऐसी घोषणाएं की और कुछ ऐसी बातें कहीं जो सभी का ध्यान आकर्षित करती हैं। पीएम ने अपने भाषण में जनधन योजना, श्रमेव जयते योजना, क्लीन इंडिया व डायरेक्ट गैस सब्सिडी जैसी योजनाओं का जिक्र किया। मोदी ने भ्रष्टाचार और कालेधन पर भी सरकार का रिपोर्ट कार्ड रखा। जानिए पीएम मोदी के भाषण की 11 बड़ी बातें...

1. युवाशक्ति के लिए स्टार्ट आप इंडिया और देश के भविष्य के लिए स्टैंड अप इंडिया। 2. खननकर्मियों के लिए विशेष योजना, हर साल 6000 करोड़ खर्च करेंगे । 3. अगले एक हजार दिनों में देश के 18500 गांव में बिजली पहुंचाएंगे। 4. कृषि मंत्रालय का नाम अब कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय होगा। 5. हर बैंक की हर शाखा कम से कम एक दलित और एक ट्राइबल को स्टार्ट अप के लिए लोन दे। 6. काले धन पर तीन साल से रुका काम पहले हफ्ते में पूरा किया। 7. वन रैंक वन पेंशन पर सुखद परिणाम की उम्मीद, संबंधित लोगों से बातचीत जारी। 8. पीएम मोदी ने की छोटी नौकरियों से इंटरव्यू बंद करने की अपील। 9. हर खेत तक पानी पहुंचाने के लिए श्पर ड्रॉप मोर क्रॉपश पर सरकार का जोर। 10. किसान को जितना यूरिया चाहिए मिलेगा। 11. गैस सब्सिडी के नाम पर चोरी होने वाला 15 हजार करोड़ रु. बचा।

वक्त लगता है ...

हर एक अहसास, जो कहता अपनी कहानी
उसे जुवां पर लाने में थोड़ा वक्त लगता है
कैसे बताऊं ऐ कोरे कागज
तुझे सजाने में थोड़ा वक्त लगता है

कली को नाजुक रहने दूँ
पर खत को जलाने में थोड़ा वक्त लगता है
फेर है अगर किस्मत का फिर भी
लकीरों को मिटाने में थोड़ा वक्त लगता है

साज है मेरा ये मन
तरंगें हैं हवाओं में
सुर मिल भी जाएँ मगर
संगीत सुनाने में थोड़ा वक्त लगता है

यूँ तो हम और तुम
हैं एक ही मिट्टी के कायल
न खुश्क है न है खरे
बस हैं जरा से घायल

पर हो जरा सा मान तो
याद रखना ध्यान तुम
कि बनने में माटी को माटक
थोड़ा सा वक्त लगता है।

करुणा ढोंढियाल, बीजेएमसी प्रथम वर्ष

हमारे सपनों के अधूरे हिस्सों को देखने का पड़ाव

सम्पादक की कलम से...

अड़सठ साल पहले भारत विदेशी शासन की बेड़ियों से मुक्त हुआ था। 15 अगस्त 1947 को हमारे स्वतंत्रता संग्राम ने एक खास मंजिल तय की। लेकिन वह आखिरी मुकाम नहीं था। भारत की आजादी की लड़ाई की यही विशेषता थी कि विदेशी राज के खात्मे को कभी अंतिम उद्देश्य नहीं माना गया। बल्कि उसे उन सपनों को साकार करने का माध्यम समझा गया, जो हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने देखे थे। इन सपनों के बनने की लंबी कथा है। इसकी शुरुआत यह समझ बनने से हुई कि अंग्रेजों के शोषण से भारत भूमि के सभी जन–समूह दरिद्र हुए हैं। स्वाभाविक रूप से स्वतंत्रता को देश के आर्थिक दोहन से मुक्ति और सभी जन–समुदायों की खुशहाली के रूप में समझा गया। हमारे तब के मनीषी भारत की बहुलता और विभिन्नाता से परिचित थे। अतरू उदारता और सबको साथ लेकर चलने का तत्व उन्होंने नवोदित भारतीय राष्ट्रवाद के विचार से जोड़ा। महात्मा गांधी के आगमन के साथ स्वतंत्रता आंदोलन में जन–भागीदारी की शुरुआत हुई।

हजारों लोगों की प्रत्यक्ष सहभागिता ने वह जन–चेतना पैदा की, जो आगे चल कर हमारे लोकतंत्र का आधार बनी। लोकतंत्र की प्रगाढ़ होती आकांक्षाओं के साथ पारंपरिक रूप से शोषित–उत्पीड़ित समूहों को न्याय दिलाने का संकल्प राष्ट्रवाद के आधारभूत मूल्यों में शामिल हुआ। अतरू इन जन–समुदायों को तरक्की के विशेष अवसर देने का वादा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने किया। मगर बात यहीं तक सीमित नहीं थी। जब आजादी दूर थी, तभी इस आंदोलन के नेता देश की भावी विकास नीति पर चर्चा कर रहे थे। इस बिंदु पर महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू के मतभेद जग–जाहिर हैं। परंतु रेखांकित करने का पहलू यह है कि प्रगति का एजेंडा स्वतंत्रता संग्राम का अभिन्ना अंग बना और जब आजादी आई तो देश ने उस एजेंडे को अपनाया। देश के बंटवारे, सांप्रदायिक उन्माद, बड़े पैमाने पर खून–खराबे और आबादी की अदला–बदली की त्रासदी के बावजूद यह एजेंडा ओझल नहीं हुआ। बल्कि प्रगति के सपने ने तब उस दर्द से उबरने में भारतवासियों की मदद की। आज यह इसलिए याद करने योग्य है, क्योंकि उस सपने के कई हिस्से अधूरे हैं। आज स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर यह हम सबके लिए आत्म–निरीक्षण का प्रश्न है कि आजादी से जो बोध होता है, क्या वह सभी भारतवासियों को उपलब्ध है? उत्सव और प्राप्त उपलब्धियों पर गौरव के क्षणों में भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आज भी करोड़ों देशवासी बुनियादी सुविधाओं एवं गरिमामय जीवन के लिए अनिवार्य अवसरों से वंचित हैं। जब तक ऐसा है, स्वतंत्रता सेनानियों का सपना साकार नहीं होगा। तब तक उनका बलिदान हमारी अंतर्चेतना पर बोझ बना रहेगा। गुजरे 68 साल की हमारी सफलताएं गर्व करने योग्य हैं, लेकिन आज के दिन हमें केवल उन पर नहीं, बल्कि उन विफलताओं पर भी ध्यान देना चाहिए, जिन पर विजय पाए बिना हमारा स्वतंत्रता संग्राम अपनी अंतिम मंजिल तक नहीं पहुंच सकता। कई लक्ष्य ऐसे हैं जो अभी हमारी पहुंच से दूर बने हुए हैं उन्हें हासिल करना जरूरी है। अधिकतम तक नहीं बल्कि सभी तक पहुंचने वाली आजादी का ही ख्वाब हमने देखा था वह लक्ष्य पाना बाकी है।

Orientation Program

Photos: Lalit Mohan, Shikhar, Shubham

Goods and Services Tax (GST)

GST Stands for Goods and Services Tax, it is a Bill pending in both the house of Parliament and is expected to be in power from April 2016. GST will bring all different kinds of taxes like Custom Duty, Service Tax, VAT (Value Added Tax), etc. all under one roof, there will not be any difference between goods and services because it would be levied on both goods and services produced in our country. It will help in bringing transparency to the Government Taxes and will be beneficial for consumers and it will be divided in manufacturer and buyer to divide the burden of taxes.

GST will remove all State level taxes which will help in avoiding confusion of taxes among consumers and it would be levied on all Goods and Services produced in our country, imports from other country but the exports will be zero rated which will help in increasing the exports which will lead to more income for of our country. Thus GST will make the burden lesser on consumers which will encourage them to buy more, buying more will lead to more consumption and more consumption will lead to more production and more production will lead to more income and employment.

-Anmol Pasricha
BJMC 3rd Sem

Silent PM, Adamant opposition and troubled layman

National Democratic Alliance is facing tough time in media as well as in parliament over issues of Lalit gate, One rank one pension,Vyapam scam and controvercial speeches by its leaders.Oppositon is adamant over resignation of External affairs minister Shushma Swaraj,Rajasthan Chief Minister Vasundhara Raje and Madhya Pradesh Chief Minister Shivrah Singh Chauhan. BJP spokesperson's are cornerned everywhere in every debate and discussion but the leader on whom they have expectations is silent. Narendra Modi is silent on all these issues. When discussion was done in the Parliament Prime Minister was not present.In every rally and radio program "Maan ki Baat" PM made a distance from these issues. Even when Rahul Gandhi attacked on Narendra Modi with a comment of "Soot Boot Ki Sarkar" PM din't replied.Congress president Sonia Gandhi said PM is on "maun Vrat".

Parliament was disrupted by opposition everyday in the monson session. Crores of rupees of the citizens are wasted on parliament session and salaries of MP's. Important bills like GST are blocked. The economy is facing a situation where a lot of reforms are expected.Then it is the responsibility of opposition also that it should play a constructive role in the parliament to at least make way for important bills to paas.

The founding fathers of our constitution have given us right to amend and right to disscuss in the parliament.Then why parliament looks like an arena? All the problems of the country are placed in a back burner and a fight of votes goes on. No parliament proceedings and silence of Prime Minister. All these problems together leaves lay man no where.Judiciary is working on behalf of legislature,then this is called Judcial activism but what option Judiciary and people have when legislature do not work properly. This problem of parliament not working can also lead the lay man towards social acticism. A lot of protests are taking place from the last half decade across the country. This is all because the laws are not constituted on time and people are forced to come on road for very issue.

Government and opposition both makes every issue a prestige question which further leads to deadlock in the Parliament no one cares to disscuss or debate.it's not important who is wrong and who is right but the question is what is wrong of citizens of India and what is right. The government and opposition both should work together in the parliament for the citizens avoiding any political asirations. The Opposition should allow parliament to function and the ruling parties should try to make consensus with every one to avoid deadlock.

-Gaurav Joshi
BJMC 3rd Sem.

चमक रहा इवेंट मैनेजमेंट, उभर रहे नए रोजगार

उदारीकरण और वैश्वीकरण की नीतियों ने हमारी आर्थिक और सामाजिक ढांचे को ही बदल दिया है। यही वजह है कि आज लोगों में बच्चों के बर्थ डे कार्यक्रम से लेकर शादी–विवाह तक के समारोहों में बड़े पैमाने पर मनाने की होड़ लग गई है। यही वजह है कि आज स्टेटस सिंबल बन चुके सामाजिक रस्मों–रिवाजों को पूरा करने की जिम्मेदारी इवेंट मैनेजमेंट कंपनियों को सौंपी जानी लगी है। ये कंपनियां मोटी रकम लेकर संपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन करती हैं। फिलहाल इस व्यवसाय का देश भर में 600 हजार करोड़ रुपए का कारोबार है। इसमें हर साल 30 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी भी हो रही है। लिहाजा इस क्षेत्र में रोजगार की असीम संभावनाएं उभर कर सामने आई हैं।

इवेंट मैनेजमेंट का मतलब कार्यक्रम प्रबंधन है। जिसके तहत शादी, पार्टियां, बर्थ डे पार्टियां, सौन्दर्य प्रतियोगिता, खेल आयोजन, उद्योग जगत के विभिन्न कार्यक्रमों जैसे नए उत्पादों की लांचिंग, प्रेस कांफ्रेंस, सेमिनार, प्रशिक्षण और ब्रांड शो जैसे कार्यक्रम हैं। इवेंट मैनेजमेंट के तहत इन कार्यक्रमों से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों का एक समूह कार्यक्रम कराने वालों की स्थिति का अध्ययन करता है। जिसके आधार पर ही इवेंट मैनेजर कार्यक्रमों की तैयारी करते हैं। आयोजक की जिम्मेदारी सिर्फ पैसे चुकाने तक ही होती है। इवेंट मैनेजमेंट के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के कार्यों का संपादन किया जाता है। लिहाजा इसके लिए किसी विशेष पाठ्यक्रम की व्यवस्था नहीं है। यह व्यवसाय पूरी तरह से व्यवहार कुशलता और संचालन व्यवस्था पर आधारित है। इसलिए आमतौर पर एमबीए और जनसंचार से संबंधित डिग्रियां एक कुशल इवेंट मैनेजर बनने के लिए सहायक होती हैं। लेकिन व्यवहारिक रूप से कोई भी ग्रेजुएट युवक जो बहिमुखी प्रतिभा का धनी है और अपनी बातों को प्रभावी ढंग से दूसरे के समक्ष रखने में सक्षम है तथा उसमें प्रबंधन की क्षमता हो वह इसे कॅरियर के तौर पर अपना सकता है।

एक इवेंट मैनेजर में टीम भावना होना बहुत जरूरी है। क्योंकि यह इस व्यवसाय का मेरू दंड है। इस कारोबार में उतरने से पहले

अभ्यर्थी को किसी इवेंट कंपनी में बतौर प्रशिक्षु काम करना आवश्यक है। इसके अलावा उसे पार्टियों के आयोजन में हो रहे बदलाव से अवगत होना भी जरूरी है। साथ ही समाज के धनी तबके के बीच पैठ एक इवेंट मैंनेजर की सफलता के सूत्र हैं।

इच्छुक अभ्यर्थी इन संस्थानों से संपर्क कर सकते हैं– 1. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इवेंट मैनेजमेंट, 7 एवन आरकेड, डीजे रो विल पार्ले मुंबई। 2. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन, जेएनयू कैम्पस, नई दिल्ली। 3. मुद्रा इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन, शोला अहमदाबाद। 4. सेंट जेवियर्स कॉलेज ऑफ कम्युनिकेशन, धोबी तालाब रोड़, लाइंस मुंबई। 5. केजे सोमाया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, विले पार्ले मुंबई। 6. यूनिवर्सिटी ऑफ पुणे, गणेश खिंड, पुणे।

प्रस्तुति- करूणा, बीजेएमसी प्रथम वर्ष

प्रबंधन के क्षेत्र में कॅरियर यानी सुरक्षित भविष्य

प्रबंधन चाहे घर का हो या किसी व्यवसाय या कंपनी का स्वयं में एक बड़ा काम है। लेकिन इस जिम्मेदारी को निभाने वाले कम ही लोग होते हैं। प्रबंधन का काम जितना चुनौतीपूर्ण है, उतना ही सम्मानजनक भी है। नेतृत्व क्षमता और अपनी ऊर्जा का सही इस्तेमाल करने की हसरत रखने वाले युवा मानव संसाधन प्रबंधन को कॅरियर के तौर पर अपना सकते हैं।

मानव संसाधन प्रबंधक के अंतर्गत कार्यों को बेहतर तरीके से करने के गुर सिखाए जाते हैं। जिनमें कर्मचारियों की कार्यक्षमता को बनाए रखना, उनमें टीम वर्क की भावना पैदा करना, काम करने का आदर्श माहौल तैयार करना, कंपनी को लाभ की स्थिति में बनाए रखना और कंपनी के बेहतर भविष्य के लिए नए–नए अनुसंधान करना शामिल है।

मानव संसाधन प्रबंधन में कॅरियर बनाने के इच्छुक अभ्यर्थी को किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक होना आवश्यक है। इसके अलावा अभ्यर्थी की तर्कशक्ति परीक्षण अच्छा होना चाहिए साथ ही गणित और सामान्य ज्ञान पर अच्छी पकड़ होनी चाहिए। मानव संसाधन प्रबंधन डिप्लोमा के लिए प्रवेश की प्रक्रिया काफी जटिल है। इसके लिए संयुक्त प्रवेश परीक्षा कैट और मैनेजमेंट प्रवेश परीक्षा मैट के जरिए अभ्यर्थी का चयन होता है। पहले लिखित परीक्षा होती है और इसमें उत्तीर्ण लोगों का तर्कशक्ति, सामान्य ज्ञान और निर्णय शक्ति पर केंद्रित साक्षात्कार होता है। इन सभी में सफल अभ्यर्थी को संस्थान में प्रवेश दिया जाता है। पाठ्यक्रम में डिप्लोमा अवधि में छात्रों की व्यवहारिकता पर ज्यादा जोर दिया जाता है। इसके लिए छात्रों को सेमिनार, गेस्ट लेक्चर प्रोग्राम, कार्यशाला में ज्यादा से ज्यादा भागीदार बनाया जाता है। सफलतापूर्वक पाठ्यक्रम पूरा करने वाले अभ्यर्थी के लिए सम्मानित एवं उच्च आय वाले रोजगार के दरवाजे खुद व खुद खुल जाते हैं। निजी

शिक्षण संस्थानों, कंपनियों, अस्पतालों, सेवा आधारित संस्थाओं में मानव संसाधन प्रबंधन डिप्लोमाधारी के लिए अपार संभावनाएं हैं। रोजगार मिलने बाद अनुभव बढ़ने के साथ साथ अभ्यर्थी की आय भी बढ़ती जाती है। इन संस्थानों से आप मानव संसाधन में डिप्लोमा कर सकते हैं– 1. इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्ट्रडीज, गाजियाबाद। 2. बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ लिबरल आर्ट्स एण्ड मैनेजमेंट साइंसेज, कोलकाता। 3. एएस इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, कटक। 4. असम इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, जम्मू। 5. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हयूमन रिसोर्स डेवलमेंट, चेन्नई। 6. दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

प्रस्तुति- कृति नारंग, बीजेएमसी प्रथम वर्ष

अब मिलने के नाम पर सलाम रह गये आदमी कहाँ है कोरे नाम रह गये।
मुद्दत हुई देश को आजाद सुना था हम आज भी गुलाम के गुलाम रह गये।।

एक बार फिर आ गया स्वतन्त्रता दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व, हमारी राष्ट्रीय अस्मिता का गौरवदिवस। भारत को आजाद हुए एक और वर्ष बीत गया लेकिन अभी तक या समझ में नहीं आया कि आजादी भारतवासियों को मिली है या सिर्फ भारत को। भारत के कौने–कौने में आज भी करोड़ो की संख्या में लोग मौजूद है उनके पास सर छुपाने के लिए छत नहीं है, तन ढ़कने के लिए कपड़ा नहीं है और पेट भरने के लिए दो वक्त की रोटी नहीं हैं। फिर हम इतने फक्र से कैसे कह सकते है कि हम आजाद है? क्या सिर्फ इसी का नाम आजादी है कि अंग्रेजों ने भारत देश को आजाद कर दिया और हम उस दिन को जश्न कि रूप में मनाकर कहते रहे कि हम आजाद है? अगर ऐसा है तो माफ किजिएगा ऐसा कोई भी जश्न बेईमानी लगता है। जरा सोचिए कितने जतन, संघर्ष, बलिदान और साहस से नेताजी सुभाष चन्द्रबोस, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, सुखदेव जैसे अनगिनत अमर शहीदों ने भारत को अंग्रेजों से आजाद कराया।

क्या सिर्फ देश का आजाद होना ही आजादी है? इंसान का इंसान से आजाद होना नहीं। क्या इसी दिन के लिए देश भक्तों ने अपना जीवन कुर्बान किया? आजाद होने के बाद आज भी हम गुलाम है और इसी प्रकार गंदी और अवसरवादी राजनीति का यह कुचक्र चलता रहा तो कल भी हम गुलाम ही रहेगें।

"ले आई फिर कहाँ पर, किस्मत हमें
कहाँ से, ये तो वही जगह है, गुजरे थे
हम जहाँ से"

कहते है भारत कभी सोने की चिड़िया कहलाता था। अंगेज सब लूटकर ले गये। अरे भाई चोर तो चोरी करेगा ही लेकिन घर के सदस्य को तो नही करनी चाहिए। आज भी भारत सोने की नहीं हीरे की चिड़िया साबित हो सकता है बस न्यायपालिका को थोड़ा और कड़क होना पड़ेगा क्योकि ऐसा नेता भी राजनीति में मौजूद है जो गरीबों का खून चूसकर खूब फल–फूल रहे है। अपनी सात नहीं सत्तर पीढ़ी का इंतजाम कर रहे है। ऐसे में गरीबी हटाने का नारा देने से क्या वास्तव में गरीबी हटा पायेंगे। गरीब के रहने के लिए मकान, पहनने के लिए कपड़ा, पेट भरने के लिए दो वक्त की रोटी मुहैया करा पायेंगे। शायद आप सबका एक ही जवाब होगा नहीं। फिर आप सोचिये आजादी का जश्न क्या मायने रखता है ऐसे बेसहारा, बेबस, लाचार लोगों के लिए। आज निश्चय ही भयंकर चुनौतियों से घिरी है भारत की आजादी। धर्म, जाति और भाषा के नाम पर हम सबको भ्रमित किया जा रहा है। राजनीति से भटके मुसाफिर यानि वोट तथा नोट को देश की अस्मिता से ऊपर मानने वाले नेतागण इस राष्ट्र की रक्षा नहीं कर सकेगें, चूकि इनका लक्ष्य सिर्फ सत्ता प्राप्त करना है। भारत की आजदी की रक्षा करने का संकल्प तो हमें और आपको करना है, इस राष्ट्र की युवापीढ़ी को करना है जिसके भीतर महान वैज्ञानिक, कवि, इंजीनियर, डॉक्टर, शिक्षक आदि छिपे है।आईये अपने देश की आजादी की गरिमा को फिर से प्रतिष्ठित करने का संकल्प तो हमें और आपको करना है। संकटो से घिरी आजादी को बचाना हमारा राष्ट्र धर्म है सभी का सर्वोच्च कर्तव्य है–स्व से बढ़कर राष्ट्र बने, यह मन्त्र बताना होगा!उठो साथियों मिलकर अब, यह राष्ट्र बचाना होगा।।

–आयुष्मान सिंघल, तृतीय वर्ष

This Month

August 23, 1927 - Italian immigrants Nicola Sacco and Bartolomeo Vanzetti were electrocuted inside a prison at Charlestown, Massachusetts. They had been convicted of a shoe factory payroll robbery during which the paymaster and a guard had been killed. Following their convictions, all appeals for a new trial had failed, despite the lack of hard evidence and a later admission by a known criminal that he had participated in the robbery with an organized criminal gang. The days and weeks leading up to their execution aroused worldwide protests amid accusations of unfair treatment because they had radical political views and were Italian.

*****

August 19, 1934 - In Germany, a plebiscite was held in which 89.9 percent of German voters approved granting Chancellor Adolf Hitler additional powers, including the office of president.

*****

August 14, 1935 - President Roosevelt signed the Social Security Act establishing the system which guarantees pensions to those who retire at age 65. The Social Security system also aids states in providing financial aid to dependent children, the blind and others, as well as administering a system of unemployment insurance.

*****

Compilation: Ms. Honey Shah

Basics of Media

Ribbon Microphone - A microphone whose sound pickup device consists of a ribbon that vibrates with the sound pressures within a magnetic field. Also called velocity mic.

*****

Shotgun Microphone - A highly directional microphone for picking up sounds from a relatively great distance.

*****

System Microphone - Microphone consisting of a base upon which several heads can be attached that change its sound pickup characteristic.

*****

Unidirectional - Pickup pattern in which the microphone can pick up sounds better from the front than from the sides or back.

*****

Wireless Microphone - A system that transmits audio signals over the air rather than through microphone cables. The mic is attached to a small transmitter, and the signals are received by a small receiver connected to the audio console or recording device. Also called RF (radio frequency) mic or radio mic.

*****

Ambience - Background sounds.

*****

Automatic Dialogue Replacement (ADR) - The synchronization of speech with the lip movements of the speaker in postproduction. Not really automatic.

*****

Compilation: Rahul Mittal

जब न होंगी बेटियां तो किसे बचाएंगे, किसे पढ़ाएंगे?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल पर 'बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ' अभियान की शुरूआत हुई है। हरियाणा, राजस्थान यहां तक कि राजधानी दिल्ली में बेटियों की घटती संख्या चिंतनीय है। हालांकि अब जो ताजे आंकड़े आए हैं, उसमें दिल्ली में लड़कियों की संख्या बढ़ने की बात सामने आई है। पर जब बात भ्रूण हत्या की आती है तो सारे कायदे–कानून धरे रहे जाते हैं। ऐसा नहीं है कि कन्या भ्रूण हत्या के लिए कड़े कानून नहीं हैं, फिर भी गर्भ में कन्या की हत्या जारी है। अब लाख टके का सवाल है कि जब बेटी ही नहीं रहेगी, तो क्या पढ़ेगी और क्या समाज होगा?

भारत में हर साल लाखों कन्याओं को कोख में ही मार दिया जाता है। गिरते लिंगानुपात इस बात की पुष्टि करते हैं। एक लड़की की हत्या के साथ कई रिश्तों की भी हत्या होती है। इस काम में सहयोगी भी हमारे आसपास के ही होते हैं। अल्ट्रासाउंड सेंटर, डॉक्टर और दलाल थोड़े से पैसों के लालच में इस काम को और भी आसान बनाते हैं। अब तक लोगों की धारणा यही थी कि कन्या भ्रूण हत्या गरीब और अनपढ़ परिवार ही करते हैं, पर यह प्रवृत्ति सिर्फ छोटे शहरों ही नहीं बल्कि पढ़े–लिखे लोगों और विकसित शहरों में भी दिखती है। माता–पिता, परिवार–समाज कोई भी लड़की को अपना वारिस नहीं बनाना चाहता। उनके लिए लड़की का होना सिर्फ एक जिम्मेदारी भर है। उच्च शिक्षित वर्ग हो या पिछड़ा और अनपढ़ वर्ग दोनों की सोच लड़कियों के लिए एक ही है।

पिछले कुछ दशक में शिक्षा का विस्तार तो हुआ है पर आज भी उस शिक्षा में लड़कियों के प्रति जागरूकता या सकारात्मक सोच नहीं दिखती। कन्या भ्रूण हत्या हा या रेप जैसे मामले हों, यह सिर्फ लड़कियों के हिस्से में आता है। आज जब लड़कियां हर क्षेत्र में तरक्की कर रही हैं, हर ऊंचाई को छूने का हौसला रखती हैं तो ऐसे में उन्हें वह मौका नहीं मिल रहा है जो अमूमन लड़कों को सहजता से मिल जाते हैं। बेटियों का गर्भ में मारकर उसके सभी अधिकारों का ही हनन किया जाता है। प्रकृति के संतुलन को भी आज मनुष्य खत्म कर रहा है। इसका परिणाम भयावह हो सकता है। अगर बेटी ही नहीं होगी तो बेटों की उम्मीदें कैसे पूरी होंगी। परिवार और समाज कैसे बनेगा। जिस तरह से यह भ्रूण हत्या का सिलसिला बढ़ता जा रहा है आने वाले समय में लड़कों को शादी के लिए लड़कियां ढूंढ़नी मुश्किल हो जाएंगी।

महिलाओं के अधिकार और सुरक्षा के लिए नित नए कानून अमल में लाए जा रहे हैं पर बात जब गर्भ में पल रही बेटी को बचाने की आती है तो यही कानून हाथ खड़े कर देता है। लिंग निर्धारण की तकनीक का गलत इस्तेमाल लिंग हत्या कानून लागू होने से पहले होने लगा था। लड़कियों के प्रति नफरत की शुरूआत उसके अपनों द्वारा ही शुरू होती है। कहीं जबरदस्ती तो कहीं सहमति से एक मां को गर्भ में पल रही अपनी ही बेटी की हत्या का पाप ढोना पड़ता है।

महिला दिवस पर कई तरह के कार्यक्रम होते हैं। बड़ी बातें की जाती हैं पर किसी का भी ध्यान भ्रूण हत्या की तरफ नहीं जाता। लड़कियों के प्रति सामाजिक धारणा को बदलने की बात नहीं की जाती। अगर लड़कियां ही इस समाज का हिस्सा नहीं बन पाएंगी तो महिला दिवस का मतलब क्या रह जाएगा। फिर बेटी को बचाने, उसे शिक्षित और सशक्त बनाने का सपना कैसे पूरा होगा। लड़कियों के प्रति हमें अपनी सोच को बदलना होगा, तभी कानून का पालन हो पाएगा।

–बालकृष्ण मिश्र

Vol. 11 **No.** 8
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal, responsible for selection of News
under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"If a man does his best, what else is there?"

General George S. Patton

*****

"Political correctness is tyranny with manners."

Charlton Heston

*****

"You can avoid reality, but you cannot avoid the consequences of avoiding reality."

Ayn Rand

*****

"When one person suffers from a delusion it is called insanity; when many people suffer from a delusion it is called religion."

Robert Pirsig

*****

"Sex and religion are closer to each other than either might prefer."

Saint Thomas Moore

*****

"I can write better than anybody who can write faster, and I can write faster than anybody who can write better."

J. Liebling

*****

Compilation: Ms. Bhavna Madan Vij

Winners V/s Loosers

Part-49

Winners listen; Losers fight for every chance to talk.

*****

Winners always find a better way to do things; Losers stick to one way of doing things.

*****

Winners spend money in seminars and classes to improve themselves; Losers think that spending money on seminars and classes is a waste of money and they prefer to buy toys that gives them instant gratification.

*****

Winners help others to win; Losers refuse to help and think only about their own benefit.

*****

to be continued in next issue

Compilation: Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at youngster@tecnia.in